



KHAN GLOBAL STUDIES

KGS Campus, Near Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6

Mob : 8877918018, 875735880

Geography

By : Ajit Sir

चूना प्रधान स्थलाकृति

➤ घोलरंध्र (Sink Holes)

☞ धरातल पर घुलनशील क्रिया के कारण अनेक छोटे-छोटे रंध्रों का विकास होता है। उसे घोलरंध्र कहते हैं। इनका व्यास 10 मी. से कम होता है। गहरे घोलरंध्रों को विलयन रंध्र तथा विस्तृत आकार वाले घोलरंध्रों को 'डोलाइन' कहते हैं जो बहुत से घोलरंध्रों से मिलकर बनते हैं।

➤ युवाला एवं पोलजे (Uvala and Polje)

☞ डोलाइन के विस्तृत रूप को 'युवाला' कहते हैं। और युवाला की सबसे बड़ी आकृति पोलजे या पोलजे है।

☞ यूरोप के बाल्कन क्षेत्र का श्लिवनो पोलजेश विश्व का सबसे बड़ा पोलजे है।

➤ लैपीज (Lapies)

☞ घुलनशील क्रिया के कारण धरातल की ऊपरी सतह अधिक ऊबड़-खाबड़ तथा पतली शिखरिकाओं वाली हो जाती है, तो इसे लैपीजया क्लिंट कहते हैं।

➤ कंदरा (Coverns)

☞ स्थलाकृतियों में सबसे महत्वपूर्ण आकृति कंदरा है जो भूमिगत जल के अपरदन के कारण निर्मित होती है।

☞ इनकी उत्पत्ति घुलन क्रिया या अपघर्षण द्वारा होती है, इनकी सतह के नीचे एक खाली स्थान होता है जिसमें लगातार जल प्रवाहित होता रहता है।

नक्षपात्मक स्थलरूप

➤ अंधी घाटी (Blind Valley)

☞ जब जल विलयन रंध्रों से नीचे की ओर रिसने लगता है तथा नदियों की आगे की घाटियाँ शुष्क रह जाती हैं, तब यह शुष्क घाटी कहलाती है। जबकि घाटी के पिछले भाग को अंधी घाटी कहते हैं।

☞ यह प्रायः कार्स्ट प्रदेशों की नदियों में मिलती है।

➤ टेरा रोसा (Terra Rossa)

☞ जब वर्षा का जल घुलनशील क्रियाओं के आधार पर चट्टानों के कुछ अंशों को घोलकर भूमि के आंतरिक भाग में प्रवेश करता है तो सतही मिट्टी की एक पतली परत का विकास होता है, जिसे टेरा रोसा कहा जाता है।

☞ इस प्रकार की मिट्टियों में चूने एवं लोहा की अधिकता होती है।

➤ स्टैलेक्टाइट (Stalactite)

☞ ये स्थलाकृतियाँ गुफा के अंदर पाई जाती हैं।

☞ भूमिगत कंदराओं में जब समस्त जल फैल जाता है या भौमजल का स्तर नीचे हो जाता है तो कंदरा की ऊपरी छत से जल रिसकर नीचे टपकने लगता है।

☞ जब कंदरा की छत के निचले स्तर पर पदार्थों का निक्षेप होने लगता है यह निक्षेप लंबे एवं पतले स्तंभों के रूप में होता है। इन लटकते हुए स्तंभों को स्टैलेक्टाइट कहा जाता है। इन्हें अवशैल भी कहते हैं।

➤ स्टैलेग्माइट (Stalagmite)

☞ यदि कंदरा की छत से रिसने वाले जल की मात्रा अधिक होती है तो वह सीधे रिसकर कंदरा की सतह पर पहुँच जाता है इस तरह कंदरा की सतह पर निक्षेपात्मक स्तंभ का निर्माण होता है।

☞ निक्षेपण द्वारा इन स्तंभों की ऊँचाई ऊपर की ओर बढ़ने लगती है। इस प्रकार के स्तंभों को स्टैलेग्माइट कहते हैं। इनकी ऊँचाई लगातार बढ़ती जाती है तथा यह पतले और नुकीले होते हैं।

➤ हम्स (Hums)

☞ चूना क्षेत्रों में घुलनशील क्रिया द्वारा अधिकांश चूना पत्थर चट्टानें घुल जाती हैं तो एक ऐसी अघुलनशील सिलिका प्रधान चट्टानों से निर्मित सतह का निर्माण होता जिसे हम्स कहते हैं।

☞ इस सतह के बीच कभी-कभी कठोर चट्टानों के अवशिष्ट टीले दिखाई पड़ते हैं, जिन्हें फ्राँस एवं यूगोस्लाविया में हम्स कहा जाता है।

☞ इन स्थलाकृतियों को मध्य अमेरिकी देशों में 'हे स्टैक' (Hay stack) एवं क्यूबा में 'मोगोट्स' कहा जाता है।

➤ कार्स्ट मैदान (Karst Plain)

☞ कार्स्ट प्रदेश (Karst Region) का तात्पर्य एक ऐसे क्षेत्र से है, जिसका निर्माण/विकास घुलनशील चूना प्रधान शैलों से होता है। इसमें लगभग सभी आकार के अनेक छिद्र होते हैं।

☞ कार्स्ट प्रदेश का नामकरण पूर्व यूगोस्लाविया के कार्स्ट प्रदेश (पूर्वी एडियाट्रिक सागर के तट पर) के आधार पर हुआ था, जहाँ ऐसे स्थलस्वरूप बहुतायत में पाये जाते हैं।

☞ भारत में मध्य प्रदेश का पंचमढ़ी क्षेत्र, जम्मू-कश्मीर, देहरादून, पूर्वी हिमालय, बस्तर जिला (छत्तीसगढ़), रोहतास पठार (बिहार) के आस-पास के क्षेत्र आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

➤ सागरीय जल द्वारा निर्मित स्थलाकृति (Landforms Created by Sea Water)

☞ सागरीय जल की क्रियाएँ कई कारकों द्वारा संपन्न होती हैं। इनमें लहरें, धाराएँ, ज्वारीय तरंग तथा सुनामी शामिल हैं। लहरों का कार्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इनके द्वारा निम्नलिखित स्थलाकृतियाँ उत्पन्न होती हैं-

➤ तटीय कंदरा (Coastal Caves)

☞ तटीय चट्टानों के भिन्न-भिन्न स्थानों में जहाँ संधियाँ, भ्रंश व कमजोर संरचना मिलती है, वहाँ तरंगों तीव्रगति से अपरदन करती हैं जिससे एक तटीय कंदरा का निर्माण होता है।

➤ 'क्लिफ' या भृगु (Cliffs)

☞ समुद्र तट का वह भाग जो बिल्कुल लंबवत् हो तो उसे क्लिफ या भृगु कहते हैं। अर्थात् दूसरे शब्दों में खड़ी ढाल वाले समुद्री तट को 'भृगु' या 'क्लिफ' कहते हैं।

➤ स्टक (Stack)

☞ कई कंदराओं के एक साथ जुड़ जाने से उनके आर-पार जल बहने लगता है तो इस आकृति को प्राकृतिक मेहराब कहते हैं।
☞ प्राकृतिक मेहराबों की प्रकृति अस्थायी होती है। इन मेहराबों के नष्ट होने के बाद चट्टान का जो हिस्सा समुद्र जल स्तंभ के समान शेष रह जाता है, उस अवस्था को स्टैक कहते हैं।

➤ पुलिन (Beach)

☞ समुद्र तटीय क्षेत्रों में ज्वार-भाटा के जलस्तर और समुद्र तट रेखाओं के बीच बालू, बजरी, गोलाश्म आदि पदार्थों के अस्थायी निक्षेप से बनी स्थलाकृति को पुलिन कहा जाता है।

➤ रोधिका (Bars)

☞ समुद्री तरंगों व समुद्री धाराओं द्वारा निक्षेप के फलस्वरूप निर्मित कटकनुमा या बांधनुमा स्थलाकृति को रोधिका कहते हैं।

☞ किसी द्वीप के चारों ओर अपरदित पदार्थों के निक्षेपण से रोधिका का निर्माण होता है तो उसे लूप रोधिका कहते हैं।

☞ जब तटों का विस्तार अधिक हो जाता है तो सुदूरवर्ती तटों अथवा किसी द्वीप के तटों से मिलकर बनने वाली रोधिका को संयोजक रोधिका कहते हैं।

☞ जब इनके दोनों छोर धरातल से मिल जाते हैं तो समुद्र का जल आंशिक रूप से अलग हो जाता है तो उन क्षेत्रों में समुद्री खारे जल वाली लैगून झील का निर्माण होता है।

☞ स्थलखंड से किसी द्वीप को मिलाने वाली रोधिका 'टोबोलो' (Tombolo) कहलाती है।

☞ स्थलखंड तथा समुद्री किनारों के बीच की सीमा रेखा तटरेखा कहलाती है। यह रेखा समुद्री तट का निर्माण करती है। सागरीय तरंगों द्वारा तटरेखा में लगातार बदलाव होते रहते हैं।

☞ अंतरीप (Cape) का निर्माण समुद्र तटों पर अधिक अवरोधी चट्टानों से तथा कम अवरोधी चट्टानों से खाड़ियों (Gulf and Bays) का निर्माण होता है। इनके निम्नलिखित प्रकार हैं-

➤ फियॉर्ड तट

☞ कुछ तटीय क्षेत्रों में हिमानी अत्यधिक मात्रा में अपरदन करती है और समुद्री सतह से नीचे तक गर्त का निर्माण करती है। कुछ समय बाद हिमानी पिघल जाती है और फियॉर्ड तट उभर कर आता है।

☞ फियॉर्ड तट कर किनारे खड़ी ढाल वाले होते हैं। नॉर्वे का तट फियॉर्ड तट का सुंदर उदाहरण है।

➤ रिया तट

☞ नदियों में अपरदनशील क्रिया द्वारा उच्च भूमि के नीचे धँसने से रिया तट का निर्माण होता है। इनकी आकृति V आकार की या ढलुए किनारे वाली होती है।

☞ प्रायद्वीप भारत का पश्चिमी तट का उत्तरी भाग रिया तट का उदाहरण है।

➤ डॉल्मेशियन तट

☞ एक समान पर्वतीय कटक वाले तटों के धँस जाने से डॉल्मेशियन तट का निर्माण होता है। डॉल्मेशियन तट का सर्वोत्तम उदाहरण यूगोस्लाविया है।

☞ तट तथा रोधिका के बीच बंद या अंशतः बंद सागरीय जल को लैगून कहते हैं। वास्तव में यह खारे जल की झील होती है।

☞ यह पतली स्थलीय पेटी या अवरोध द्वारा जल क्षेत्र से अंशतः या पूर्णतः जुड़ा हुआ उथले जल का क्षेत्र होता है, जैसे- भारत के ओडिशा का चिल्का लैगून।

➤ संयोजक रोधिका (Connecting Bars)

☞ जब तटों का विस्तार अधिक हो जाता है सुदूरवर्ती तटों अथवा किसी द्वीप के तटों मिलकर बनने वाली रोधिका को संयोजक रोधिका कहते हैं।

☞ जब इनके दोनों छोर धरातल से मिल जाते हैं। समुद्र का जल आंशिक रूप से अलग हो जाता है तो उन क्षेत्रों में समुद्री खारे जल वाली लैगून झील का निर्माण होता है।

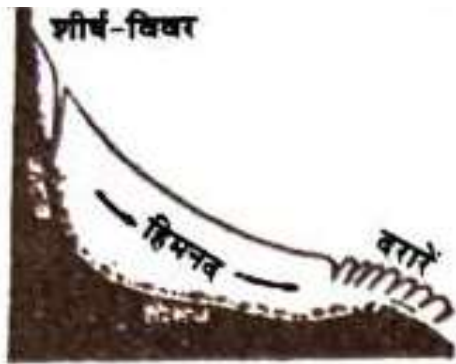
➤ लैगून (Lagoon)

☞ तट तथा रोधिका के बीच बंद या अंशतः बंद सागरीय जल को लैगून कहते हैं। वास्तव में यह खारे जल की झील होती है।

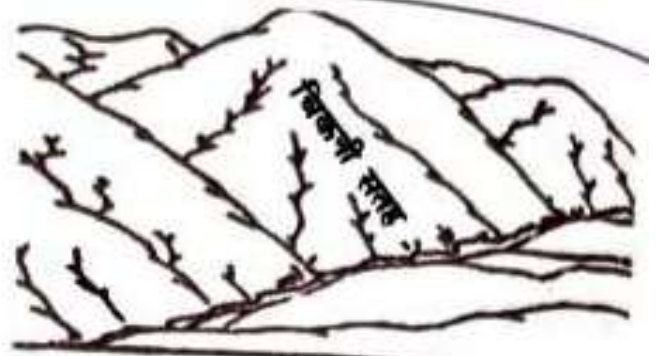
☞ यह पतली स्थलीय पेटी या अवरोध द्वारा जल क्षेत्र से अंशतः या पूर्णतः जुड़ा हुआ उथले जल का क्षेत्र होता है, जैसे- भारत के ओडिशा का चिल्का लैगून।

➤ हिमानी कृत

☞ स्थलाकृतियाँ (Glacial Topographies) पर्वतीय एवं ध्रुवीय भागों की वह रेखा जिसके ऊपर साल भर बर्फ की परत रहती हो और पूरी तरह कभी नहीं पिघलती हो, हिम रेखा कहलाती है। ऋतु के अनुसार हिमरेखा में परिवर्तन होता है।



पहाड़ी ढाल पर सड़क का विकास



हिमाच्छादन के पहले



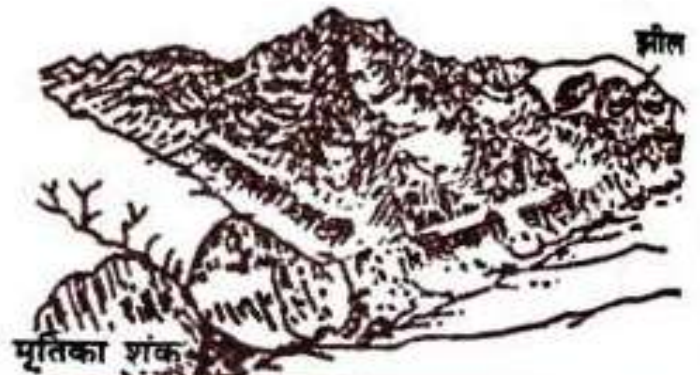
हिमनद के अपरदन से खनी तीन प्रमुख स्थलाकृतियां



हिमनदन काल में



1. मुख्य हिमघाटी
2. निलंबी (लटकती) घाटी



हिमनदों के पिघल जाने पर

अंतिम हिमोढ़



➤ **हिमनद के निक्षेपण से बनी प्रमुख स्थालाकृतियाँ**

☞ हिमानी का तात्पर्य हिम की नदी से है जो गुरुत्वाकर्षण एवं दाब के प्रभाव से अत्यंत मंद गति से गतिशील होती है। हिमानी को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है-

1. महाद्वीपीय हिमानी, 2. घाटी हिमानी 3. पर्वतपदीय हिमानी।

➤ **'U' आकार की घाटी ('U' Shaped Valley)**

☞ हिमानी द्वारा संपूर्ण तली पर लगभग समान रूप से अपरदन होता है जिसके फलस्वरूप खड़ी ढाल वाली घाटी का निर्माण होता है। इनके तल सपाट एवं चौरस होते हैं जिनकी आकृति अंग्रेजी के U (यू) अक्षर से मिलती है। अर्थात् हिमानी के ऊर्ध्वाधर अपरदन से 'U' आकार की घाटी का निर्माण होता है

➤ **लटकती या निलंबित घाटी (Hanging Valley's)**

☞ मुख्य हिमानी की तुलना में उसकी सहायक हिमानी में हिम की मात्रा कम होती है, अतः इसके द्वारा निर्मित घाटी की गहराई कम होती है। इसके फलस्वरूप सहायक घाटियाँ मुख्य घाटियों पर लटकती हुई प्रतीत होती हैं। इन्हीं कारणों से इन्हें लटकती हुई घाटियाँ कहते हैं।

➤ **हिमगहार या सर्क (Cirque or Corrie)**

☞ हिमनदियाँ जब पर्वतीय क्षेत्रों से नीचे की तरफ सरकती हुई उतरती हैं तो वहाँ आरामकुर्सी की तरह आकृति का निर्माण होता है जिसे सर्क कहते हैं। इन सर्कों में सदैव हिम भरे होते हैं जिसके कारण इन्हें हिम हिमागार, हिमगर्त भी कहा जाता है।

➤ **एरीट (Arete)**

☞ जब पहाड़ी के दोनों ओर अर्द्ध-वृत्ताकार गर्त एक-दूसरे की ओर खिसकने लगते हैं तो उनका मध्य का भाग अपरदित होकर नुकीला हो जाता है, जिसे एरीट कहते हैं।

➤ **हॉर्न (Horn)**

जब एक पर्वत के किनारे समान ऊँचाई के चारों ओर से सर्क बनने लगते हैं तो बीच का नुकीला शीर्ष हॉर्न कहलाता है- स्विट्जरलैंड का 'मैटरहॉर्न' विश्व प्रसिद्ध है।

➤ **नुनाटक (Nunatak)**

☞ नुनाटक ऐसी ऊँची पर्वतीय चोटी है जो हिमक्षेत्र या हिमनद से ऊपर उठे रहते हैं और चारों तरफ से बर्फ से घिरे रहते हैं। अर्थात् दूसरे शब्दों में हिमाच्छादन होने के बाद भी चट्टानों के निकले। हुए ऊँचे टीले नुनाटक कहलाते हैं।

➤ **भेड़ शिला (Roche Moutone)**

☞ जब हिमानी के मार्ग में कड़ी ऊँची चट्टानी आकृतियाँ बाधा डालती हैं तो हिमानी उनके ऊपर से बहने लगती है तथा हिमानी उनके ढाल को घिसकर चिकना कर देती है और विपरीत दिशा में ऊँची-नीची ऊबड़-खाबड़ ढाल बन जाती है, अतः ऐसी स्थलाकृति का विकास होता है जो देखने पर बैठी हुई भेड़ की भाँति प्रतीत होती है।

➤ **हिमानी (Moraires)**

☞ हिमानियों द्वारा अपरदित व परिवहित पदार्थों का निक्षेपण हिमोढ़ कहलाता है।

➤ **अपक्षेप मैदान (Outwash plain)**

☞ जब बर्फ पिघलती है और हिमजल के रूप में प्रवाहित होती है तो हिमोढ़ एक चादर की भाँति काफी विस्तृत भाग में फैल जाती है। इसी मैदान को अपक्षेप मैदान कहते हैं।

➤ **फियॉर्ड (Fiord)**

☞ हिमानी की अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित वैसी घाटियाँ जो सागर में जलमग्न हैं फियॉर्ड के नाम से जानी जाती हैं। अलास्का, चिली, स्कैन्डीनेविया आदि के तटीय क्षेत्रों में फियॉर्ड पाए जाते हैं। फियॉर्ड के कारण तटरेखा काफी अनियमित हो जाती है।

➤ **पवन द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ (Landforms Created by Wind)**

☞ पवन ही अपरदन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक है जो शुष्क व अर्द्ध-शुष्क प्रदेशों में अपरदन करती है।

☞ सामान्य से भी कम वर्षा होने के कारण आर्द्रता और वनस्पति के अभाव में मिट्टी के कण ढीले रहते हैं। यहाँ हवा को भौतिक अपक्षय से बहुत सहायता मिलती है।

☞ भूतल पर पवनों का कटाव अत्यधिक होता है क्योंकि बालू के कण अधिक ऊपर तक नहीं उड़ पाते। इसका अपरदनात्मक कार्य मुख्यतः भौतिक ही होता है जो अपघर्षण, सन्निघर्षण तथा अपवहन के रूप में किया जाता है।

पवन के अपरदन से निर्मित स्थलाकृतियाँ

➤ **यारडांग (Yardang)**

☞ मरुस्थलीय क्षेत्र में जब कठोर एवं कोमल चट्टाने एकांतर व लंबवत् रूप में स्थित हों तो ऐसी स्थिति में वायु द्वारा कठोर चट्टानों की तुलना में कोमल चट्टानों के अधिक अपरदन के कारण एक ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति का विकास होता है जिसे यारडांग कहते हैं।

➤ **भूस्तंभ (Demoiselles)**

☞ इसे ज्यूगेन का ही विकसित रूप माना जाता है। यह एक स्तंभनुमा स्थलाकृति है जिसके शीर्ष पर कठोर चट्टानें स्थित होती हैं।

➤ **ड्राइकाइंटर (Driekinter)**

☞ शुष्क प्रदेशों में मौजूद शिलाखंडों पर वायु की अपरदन क्रिया के कारण जब उनकी आकृति चतुष्फलनुमा हो जाती है तो इन्हें ड्राइकाइंटर कहा जाता है। इसका एक फलक धरातल पर होती है जबकि 3 फलक बाहर की ओर होते हैं। तीन फलक वाले बोल्टर को ड्राइकाइंटर तथा आठ फलक वाले बोल्टर को 'चौटरफैक्ट' कहा जाता है।

- **वातगर्त या अपवाहन बेसिन (Blow out)**
 - ☞ मरुस्थलीय भागों में धरातल पर फैली रेत के उड़ जाने के कारण छोटे-छोटे गर्तों का निर्माण हो जाता है, जो धीरे-धीरे बढ़कर या जुड़कर एक विस्तृत आकार धारण कर लेते हैं इन्हीं गर्तों को वातगर्त कहा जाता है। इसे सहारा के मरुस्थल में 'अपवहन गर्त' भी कहते हैं।
- **छत्रक शैल या गारा (Mushroom Rock or Gara)**
 - ☞ यह स्थलाकृति पवन के अपघर्षण से बनी है जो कुकुरमुत्ते के समान आकृति वाली होती है। चट्टानों के निचले भागों में अत्यधिक कटाव के कारण ऐसी आकृतियों का निर्माण होता है।
- **ज्यूगेन (Zeugen)**
 - ☞ इसका निर्माण मुलायम व कठोर चट्टानों की परतों की क्षैतिज अवस्था में होता है। इनकी दरारों में ओस भर जाने और रात्रि के तापमान में कमी होने पर मुलायम चट्टानों का अपरदन होने लगता है। चट्टानों के कठोर भाग टोपी की भाँति नजर आते हैं जो दवातनुमा आकृति का निर्माण करती है। इन्हें ही ज्यूगेन कहते हैं।
- **इंसेलबर्ग (Inselburg)**
 - ☞ इंसेलबर्ग एक जर्मन भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ, 'द्वीपीय पर्वत' होता है। पवनों के प्रभावी अपरदन से चट्टानों का भाग कट छँटकर समतल हो जाता है तथा कभी-कभी कड़े चट्टानी भाग टीले के रूप में ऊपर उठ जाते हैं तो उन्हें इंसेलबर्ग कहते हैं।
- **जालीदार शिला (Stone Lattice)**
 - ☞ जब तेजी से चलती पवनों मार्ग की जटिल संरचना वाली चट्टानों के मुलायम भागों को काटकर उसके आर-पार प्रवाहित होने लगती हैं, तब इससे निर्मित आकृति जालीदार शिला कहलाती है।

वायु से निर्मित निक्षेपित स्थलाकृतियाँ

- **बालुका स्तूप**
 - ☞ वायु की निक्षेपण क्रिया द्वारा निर्मित स्थलाकृतियों में बालुका स्तूप एवं लोयस प्रमुख हैं। बालुका स्तूप का निर्माण उस स्थिति में होता है, जब अवरोध की उपस्थिति के कारण पवन बालू के कणों को निक्षेपित करने लगती है। इनकी आकृति कटकनुमा तथा टीलानुमा हो सकती है। बालुका स्तूप दो प्रकार के होते हैं-
- **अनुवैर्ध्य बालुका स्तूप**
 - ☞ पवन की दिशा के समानांतर निर्मित बालुका स्तूप को अनुवैर्ध्य बालुका स्तूप कहा जाता है। इन्हें सीफ के नाम से भी जाना

जाता है। ये अधिक लंबे होते हैं तथा इनकी ऊँचाई 300 मी. तक हो सकती है।

- **अनुप्रस्थ बालुका स्तूप**
 - ☞ पवन की दिशा के लंबवत् विकसित अर्द्ध-चंद्राकार बालुका स्तूप को अनुप्रस्थ बालुका स्तूप/बरखान के नाम से जाना जाता है। इसका पवन अभिमुख ढाल उत्तल तथा पवन विमुख ढाल अवतल होता है। बालुका स्तूपों का स्थानांतरण होता रहता है। इनके आगे बढ़ने की गति सामान्यतः 5 मी. से 30 मी. प्रतिवर्ष होती है जिसके फलस्वरूप मरुस्थल का प्रसार होता है।
 - ☞ लोयस पवनों द्वारा उड़ाकर लाई गई रेत के बारीक कणों के वृहत् निक्षेप को लोयस कहते हैं।
 - ☞ लोयस के क्षेत्रों में जब जल का संपर्क मिट्टी से होता है तो वह मिट्टी बहुत उपजाऊ हो जाती है।
 - ☞ चीन के उत्तरी मैदान में लोयस मिट्टी मिलती है जो गोबी मरुस्थल से उड़ाकर लाई गई है। इसका रंग पीला होता है।

शुष्क/मरुस्थलीय प्रदेश में बहते हुए जल से निर्मित स्थलाकृतियाँ

- **प्लाय**
 - ☞ मरुस्थल के आंतरिक भाग में प्रवाहित होने वाली नदियाँ वर्षा के बाद अस्थायी झीलों का निर्माण करती हैं, जिन्हें प्लाय कहा जाता है। सैलीनास को खारे जल का प्लाय कहते हैं।
- **पेडीमेंट**
 - ☞ शुष्क प्रदेश में पर्वतीय शीर्ष के अग्रभाग में बहते हुए जल की अपरदन क्रिया द्वारा निर्मित चबूतरानुमा स्थलाकृति को पेडीमेंट के नाम से जाना जाता है।
- **बजावा**
 - ☞ पेडीमेंट के आगे कंकड़-पत्थर के निक्षेपण के कारण निर्मित स्थलाकृति को बजादा कहते हैं, यह वास्तव में मरुस्थलीय जलोढ़ पंख है।
- **पेडीप्लेन**
 - ☞ शुष्क प्रदेश में अपरदन चक्र की अंतिम अवस्था में निर्मित लगभग समतल मैदान को पेडीप्लेन कहा जाता है।
- **बरखान (Barkhans)**
 - ☞ पवन के बहाव से जब रेत का जमाव अर्द्धचंद्राकार टीले के रूप में होता है तो भुजाएँ पवनों की दिशा में निकली होती हैं, उसे 'बरखान' कहते हैं।
 - ☞ बरखान के दोनों किनारे नुकीले रूप में निकले होते हैं।

